International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(2): 335-337

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(2): 335-337
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-03-2023
Accepted: 15-04-2023

Dr. Prabhu Kumar
Assistant Professor, BRDBDPG College, Barhaj Deoria, Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
Dr. Prabhu Kumar
Assistant Professor, BRDBDPG College, Barhaj Deoria, Uttar Pradesh, India

वैशेषिक दर्शन सम्मत परमाणुवाद: एक विशलेषणात्मक अध्ययन

Dr. Prabhu Kumar

प्रस्तावना

आस्तिक दर्शनों में वैशेषिक दर्शन अन्यतम है। वैशेषिक दर्शन के अन्य नाम भी हैं। यथा- कणाद दर्शन, औलूक्य दर्शन, काश्यपीय दर्शन। इस दर्शन के प्रवक्ता महर्षि कणाद हैं। जो निश्चित स्थानान्तर पर कणभुक्, कर्णभक्ष, उलूक, काश्यप, योगी इत्यादि नामों से जाने जाते हैं। यह वैशेषिक दर्शन न्याय शास्त्र से भी प्राचीनतम है। पदार्थ विभाजन तथा परमाणुवाद प्रवर्तन वैशेषिक दर्शन के विशेष हैं। और भी नव्यन्यायशास्त्र का परिपूरक शास्त्र यह कणाद प्रवर्तित वैशेषिक दर्शन है। इस दर्शन का प्रशंसावाचक प्रवाद भी पण्डित समाज में प्रचलित है-

"काणादं पाणिनीयञ्च सर्वशास्त्रोपकारकम्"।

न्यायदर्शन के समान तन्त्र

यह दर्शन न्याय शास्त्र के समान तन्त्र ही है। यहा समान पद सादृश्यार्थक है। और तन्त्रपद सिद्धान्तवाची अथवा शास्त्रवाची है। अमरकोष में उक्त हैं-

"तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवापे परिच्छदे"। [1]

न्यायदर्शन के साथ वैशेषिक दर्शन सिद्धान्तगत सादृश्य ही प्रधान है। और जो दोनों वैजात्य दिखता है, वह गौण है। जैसे न्यायदर्शन में ही प्रमाण तत्व प्रधान है किन्तु वैशेषिक दर्शन में प्रमेय तत्व प्रधान है। और वैशेषिक मत में सात पदार्थ हैं। न्यायमत में चार में दो प्रमाण हैं।

इस प्रकार वैसादृश्य होने पर भी दोनों शास्त्रों का सादृश्य अस्वीकार है। वैसे भी वैशेषिकों के सात पदार्थ न्याय सम्प्रदाय में अवान्तर पदार्थ के रूप में स्वीकृत हैं। [2] वैसे ही भाष्य में-

न्यायमत में सोलह पदार्थ हैं।

"अस्त्यन्यदीप द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाः प्रमेयम्, तद्भेदेन चापरिसंख्येयम्।"

न्याय के सोलह पदार्थ वैशेषिकों द्वारा प्रकारान्तर से स्वीकृत हैं। यथा न्याय का संशय पदार्थ वैशेषिक के गुण के अन्तर्गत है। वैशेषिकों के प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण न्याय के प्रत्यक्ष, अनुमान से अभिन्न है। वैशेषिक उपमान और शब्द, दो प्रमाण भी अनुमान के अन्तर्गत मानते हैं। और भी मुक्ति के विषय में दोनों एकमत हैं। यहाँ दोनों मिथ्या ज्ञान की निवृत्ति और दुःख - निवृत्ति स्वीकृत है। परमाणु ही पञ्चमहाभूतों के उपादान है, दोनों सहमत हैं। और दोनों सम्प्रदाय असत्कार्यवाद और आत्मा का बहुत्व एवं सगुणत्व स्वीकार करते हैं। अतः वैशेषिक दर्शन न्याय दर्शन के समानतन्त्र कहलाता है।

वैशेषिक नामकरण

'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' इस सूत्र द्वारा विशेष शब्द से ठक् प्रत्यय के योग में निष्पन्न वैशेषिक शब्द कणाद प्रवर्तित शास्त्र का वाचक है। विशेष को अधिकृत किया हुआ ग्रन्थ, यह अर्थ है। और वह विशेष पदार्थ निरूपक ग्रन्थ है। इस शास्त्र का विशेष क्या है? तो कहते हैं- कणाद प्रवर्तित इस शास्त्र में 'विशेष' पदार्थ स्वीकृत है। जो निश्चय ही भेद बुद्धि का जनक है। यह विशेष पदार्थ ही वैशेषिक शास्त्र का विशेष है। कुछ कहते हैं कि परमाणु अथवा कण वैशेषिक दर्शन का विशेष है। और शारीरिकभाष्य में "न च अकारेण कार्येण भवितव्यमिति अतः परमाणवः जगतः कारणम् इति

वैशेषिक मत में पदार्थ

वैशेषिक दर्शन में सप्त पदार्थ स्वीकृत हैं, अतः वे वैशेषिक सप्तपदार्थवादी कहे जाते हैं। यद्यपि कणाद् - सूत्र में छः पदार्थों का उल्लेख दिखता है, वहाँ अभाव का उद्देश्य नहीं है, तथापि नवम् अध्याय में प्राग्भाव का स्वरूप उक्त है। और उदयनाचार्य द्वारा अभाव सप्त पदार्थ के रूप में गृहीत है। और भी, यह वक्तव्य है कि अभाव पदार्थ भावपद के ज्ञानाधीन है। उसके कारण अभाव का पृथक् उल्लेख सूत्र में नहीं है। न्यायकन्दलीकार ने कहा है- [3]

"अभाव पृथगनुपदेशो भावपारतन्त्रयात्, न त्वभावात् । "

वैशेषिक मत में सप्त पदार्थ ही है और वे पदार्थ हैं- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव। उसमें द्रव्य नौ ही हैं। वे हैं- पृथिवी, आप, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। गुण चौबिस हैं। और वे हैं- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरूत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष प्रयत्न धर्म, अधर्म, संस्कार ।

कर्म पाँच होते हैं। और वे हैं- उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण और गमन। सामान्य दो प्रकार का है। और वह पर और अपर है। विशेष अनन्त हैं। समवाय एक ही है। अभाव के चार भेद हैं। और वे प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव ।

वैशेषिक मत में प्रमाण

वैशेषिक दर्शन में प्रमाण दो हैं- प्रत्यक्ष में सन्निकर्ष से जो ज्ञान उत्पन्न होता है, कम् अक्षं प्रतीत्य यत् ज्ञानं जायते तत् प्रत्यक्षं वा'। अक्ष इन्द्रियाँ छः हैं- चक्षु, घ्राण, रसना, त्वक्, श्रोत्र और मन। और प्रत्यक्ष प्रमाण यहाँ इन्द्रिय है। प्रत्यक्ष सर्वज्ञीय और असर्वज्ञीय के भेद से दो प्रकार का है। असर्वज्ञीय प्रत्यक्ष पुनः दो प्रकार का है- सविकल्पक और निर्विकल्पक ।

लिङ्ग दर्शन से होने वाला ज्ञान लैङ्गिक है। वह लैङ्गिक ज्ञान अनुमिति है। व्याप्ति विशिष्ट पक्षधर्म लिङ्ग है और लिङ्ग अनुमापक है। भाष्य में उक्त है-

यदनुमेयेन सम्बद्धं प्रसिद्धं च तदन्विते।
तदभावे च नास्त्येव तल्लिङ्गमनुमानकम्॥ [4]

यहाँ 'यद', पद द्वारा हेतु अथवा लिङ्ग का बोध होता है, और 'तत्' पद द्वारा साध्य का। वैशेषिक मत में लिग का दर्शन ही अनुमान प्रमाण है। और वह अनुमान दो प्रकार का है दृष्ट और सामान्यतो दृष्ट । प्रसिद्ध साध्यों के अत्यन्त जाति भेद में दृष्ट अनुमान है। यथा गाय में सास्नामात्र (गलकंबल) उपलब्ध होने पर देशान्तर में सास्नामात्र के दर्शन से गाय की प्रतिपत्ति होती है।

प्रसिद्ध साध्यों के अत्यन्त जाति भेद में सामान्यतोदृष्ट अनुमान है। यथा किसान, वाणिक् आदि पुरूषों की प्रवृत्ति के लिए फलवत्व उपलब्ध होने रूप दृष्ट प्रयोजन को अनुद्देश्य करके प्रवर्तमान वर्ण श्रमिकों का भी फलानुमान किया जाना ।

इस मत में शब्द का तथा उपमान का पृथक् प्रामाण्य नहीं है, उनका अनुमान में ही अन्तर्भाव सम्भव होने से। और भाषा परिच्छेद में उक्त है-

शब्दोपमानयोर्नैव पृथक् प्रामाण्यमिष्यते ।
अनुमानगतार्थत्वादिति वैशेषिक मतम् ॥ [5]

परमाणुवाद (चारों भूतों के उत्पत्ति नाश का क्रम)

वैशेषिक मत में पृथिवी, जल (आप), तेज (अग्नि) और वायु, इन चारों द्रव्यों के परमाणु नित्य हैं। उन परमाणुओं के द्वारा कार्यरूप स्थूल पृथिवी आदि उत्पन्न होते हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में उनके परमाणु निष्क्रिय रहते हैं। और वे अतीन्द्रियाँ नित्य और अणुपरिमाण युक्त हैं। ईश्वर के ज्ञान से इच्छा, इच्छा से प्रयत्न (और) प्रयत्न से निष्क्रिय परमाणुओं में क्रिया उत्पन्न होती है। और वहाँ वे दो परमाणुओं का संयोग होने पर अनित्य, कार्यरूप अणु परिमाण द्वयक उत्पन्न होता है। तीन द्वयणुकों के संयोग होने पर त्रयणुक, चार त्रयणुकों द्वारा चतुरणुक होता है। और इसी क्रम से स्थूल से स्थूलतर पृथिवी आदि उत्पन्न होते हैं।

और उससे महत् पृथिवी, महत् आप (जल), महत् तेज और महत् वायु होते हैं। त्रयणुक आदि सभी महत् परिमाण से युक्त है। और पुनः ईश्वर की इच्छा वश परमाणुओं में क्रिया उत्पन्न होती है। और उस क्रिया द्वारा दो परमाणुओं के संयोग-नाश से द्वयणुक नाश होता है। और उसके द्वारा त्रयणुक आदि के नाश के क्रम से महापृथिवी आदि का नाश होता है।

प्राचीन मत में असमवायिकारण के नाश से (परमाणुद्वय के संयोग नाश से) द्वयणुकनाश तथा समवायिकारण के नाश से (द्वयणाकद्वय के नाश से) त्रयणुक नाश होता है। नवीन मत में तो सभी जगह ही असमवायिकारण के नाश से द्वयणुक आदि कार्यों का नाश होता है।

निष्कर्ष

1. अतीन्द्रिय नित्य निष्क्रिय परमाणु
2. ईश्वर की इच्छा से परमाणुओं में क्रिया
3. ३ दो परमाणुओं के संयोग से कार्यरूप, अनित्य द्वयणुक की उत्पत्ति
4. तीन द्वयणुकां के संयोग से त्रयणुक की उत्पत्ति
5. चार त्रयणुकों के संयोग से चतुरणुक की उत्पत्ति
6. इसी क्रम द्वारा महापृथिवी आदि की उत्पत्ति

संदर्भ

1. अमरकोष
2. "अस्त्यन्यदीप द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाः प्रमेयम्, तद्भेदेन चापरिसंख्येयम्।"
3. न्यायकन्दली
4. भाष्य
5. भाषा परिच्छेद